कथन का सारांश इतना ही है आप नित्य अपनी अन्तरात्मा से पूछें कि जो हम कर सकते थे, उसमें कहीं राई रत्ती त्रुटि तो नहीं रही ? आलस्य प्रमाद को कहीं चुपके से आपके क्रिया कलापों में घुस पड़ने का अवसर तो नहीं मिल गया ? अनुशासन में व्यतिरेक तो नहीं हुआ ? अपने कृत्यों को दूसरे से अधिक समझने की अहंता कहीं छद्म रूप में आप पर सवार तो नहीं हो गयी ?

यह विराट योजना पूरी होकर रहेगी। देखना इतना भर है कि इस अग्निपरीक्षा की वेला में आपका शरीर, मन और व्यवहार कहीं गड़बड़ाया तो नहीं। ऊँचे काम सदा ऊँचे व्यक्तित्व करते हैं। कोई लम्बाई से ऊँचा नहीं होता, श्रम, मनोयोग, त्याग और निरहंकारिता ही किसी को ऊँचा बनाती है। अगला कार्यक्रम ऊँचा है। आपकी ऊँचाई उससे कम न पड़ने पाए, यह एक ही आशा, अपेक्षा और विश्वास आप लोगों पर रखकर कदम बढ़ रहे हैं। आप में से कोई इस विषम वेला में पिछड़ने न पाए, जिसके लिए बाद में पश्चात्ताप करना पड़े।

—श्रीराम शर्मा आचार्य

युगान्तर चेतना प्रेस, शान्ति कुञ्ज, हरिद्वार

(एक बार नित्य पढ़ें)

अपने अंग अवयवों से !

यह मनोभाव हमारी तीन उँगलियाँ मिलकर लिख रही हैं। पर किसी को यह नहीं समझना चाहिए कि जो योजना बन रही है और कार्यान्वित हो रही है, उसे प्रस्तुत कलम कागज या उँगलियाँ ही पूरा करेंगी। करने की जिम्मेदारी आप लोगों की, हमारे नैष्ठिक कार्यकर्त्ताओं की है।

इस विशालकाय योजना में प्रेरणा ऊपर वाले ने दी है। कोई दिव्य सत्ता बता या लिखा रही है। मस्तिष्क और हृदय का हर कण-कण, जर्रा-जर्रा उसे लिख रहा है। लिख ही नहीं रहा है वरन् उसे पूरा कराने का ताना-बाना भी बुन रहा है। योजना की पूर्ति में न जाने कितनों का— कितने प्रकार का मनोयोग और श्रम, समय, साधन आदि का कितना भाग होगा। मात्र लिखने वाली उँगलियाँ न रहें या कागज कलम चुक जायें तो भी कार्य रुकेगा नहीं। क्योंकि रक्त का प्रत्येक कण और मस्तिष्क का प्रत्येक अणु उसके पीछे काम कर रहा है। इतना ही नहीं, वह दैवी सत्ता भी सतत सक्रिय है जो आँखों से न तो देखी जा सकती है और न दिखाई जा सकती है।

योजना बड़ी है। उतनी ही बड़ी जितना कि बड़ा उसका नाम है— "युग परिवर्तन"। इसके लिए अनेक वरिष्ठों का महान योगदान लगना है। उसका श्रेय संयोगवश किसी को भी क्यों न मिले।

प्रस्तुत योजना को कई बार पढ़ें। इस दृष्टि से कि उसमें सबसे बड़ा योगदान उन्हीं का होगा जो इन दिनों हमारे कलेवर के अंग अवयव बनकर रह रहे हैं। आप सबकी समन्वित शक्ति का नाम ही वह व्यक्ति है जो इन पंक्तियों को लिख रहा है।

कार्य कैसे पूरा होगा ? इतने साधन कहाँ से आएँगे ? इसकी चिन्ता आप न करें। जिसने करने के लिए कहा है, वही उसके साधन भी जुटायेगा। आप तो सिर्फ एक बात सोचें कि अधिकाधिक श्रम व समर्पण करने में एक दूसरे में कौन अग्रणी रहा ?

साधन, योग्यता, शिक्षा आदि की दृष्टि से हनुमान उस समुदाय में अकिंचन थे। उनका भूतकाल भगोड़े सुग्रीव की नौकरी करने में बीता था, पर जब महती शक्ति के साथ सच्चे-मन और पूर्ण समर्पण के साथ लग गए तो लंका दहन, समुद्र छलांगने और पर्वत उखाड़ने का, राम-लक्ष्मण को कंधे पर बिठाये फिरने का श्रेय उन्हें ही मिला। आप लोगों में से प्रत्येक से एक ही आशा और अपेक्षा है कि कोई भी परिजन हनुमान से कम स्तर का न हो। अपने कर्त्तृत्व में कोई भी अभिन्न सहचर पीछे न रहे।

काम क्या करना पड़ेगा ? यह निर्देशन और परामर्श आप लोगों को समय-समय पर मिलता रहेगा। वह तो समय की बात है। काम बदलते भी रहेंगे और बनते-बिगड़ते भी रहेंगे। आप लोग तो सिर्फ एक बात स्मरण रखें कि जिस समर्पण भाव को लेकर घर से चले थे, पहले लेकर आए थे, उसमें दिनोंदिन बढ़ोत्तरी होती रहे। कहीं राई रत्ती भी कमी न पड़ने पाए।

कार्य की विशालता को समझें। लक्ष्य तक निशाना न पहुँचे तो भी वह उस स्थान तक अवश्य पहुँचेगा जिसे अद्भुत, अनुपम, असाधारण और ऐतिहासिक कहा जा सके। इसके लिए बड़े साधन चाहिए, सो ठीक है। उसका भार दिव्य सत्ता पर छोड़ें। आप तो इतना ही करें कि आपके श्रम, समय, गुण-कर्म, स्वभाव में कहीं भी कोई त्रुटि न रहे। विश्राम की बात न सोचें, अहर्निशि एक ही बात मन में रहे कि हम इस प्रस्तुतीकरण में पूर्णरूपेण खपकर कितना योग-दान दे सकते हैं ? कितना आगे रह सकते हैं ? कितना भार उठा सकते हैं ? स्वयं को अधिकाधिक विनम्र, दूसरों को बड़ा मानें। स्वयंसेवक बनने में गौरव अनुभव करें। इसी में आपका बड़प्पन है।

अपनी थकान और सुविधा की बात न सोचें। जो कर गुजरें, उसका अहंकार न करें। वरन् इतना ही सोचें कि हमारा चिंतन, मनोयोग एवम् श्रम कितनी अधिक ऊँची भूमिका निभा सका ? कितनी बड़ी छलाँग लगा सका ? यही आपकी अग्नि परीक्षा है। इसी में आपका गौरव और समर्पण की सार्थकता है। अपने साथियों की श्रद्धा व क्षमता घटने न दें। उसे दिन-दूनी रात चौगुनी करते रहें।

स्मरण रखें कि मिशन का काम अगले दिनों बहुत बढ़ेगा। अब से कई गुना। इसके लिए आपकी तत्परता ऐसी होनी चाहिए जिसे ऊँचे से ऊँचे दर्जे की कहा जा सके। आपका अन्तराल जिसका लेखा जोखा लेते हुए अपने को कृत-कृत्य अनुभव करे। हम फूले न समाएँ और प्रेरक सत्ता आपको इतना घनिष्ठ बनाए जितना कि राम पंचायत में छठे हनुमान भी घुस पड़े थे।

प्रतिज्ञा पत्र

मैं उपरोक्त सभी नियमों से आरम्भ से ही परिचित हूँ। उसका पालन भी करता हूँ। जो कमी रह रही होगी, उसे पूरा करने के लिए भविष्य में और भी अधिक सावधानी एवं तत्परता बरतूँगा।

नाम .... हस्ताक्षर ....

कार्य क्षेत्र का नाम ....

घर का पूर्व पता ....

....

....

दिनांक ....

आश्रम वासियों की रीति-नीति एवं परम्परा

शान्ति कुञ्ज ब्रह्मवर्चस् आश्रमों में मात्र आदर्शों के लिए समर्पित कार्यकर्त्ताओं के निवास की व्यवस्था, उद्देश्य विशेष के लिए की गयी है। संयुक्त परिवार प्रक्रिया को अधिक व्यापक और व्यावहारिक बनाते हुए समाज की अभिनव संरचना का प्रयोग परीक्षण एवं आदर्श उपस्थित करना है; ताकि यह प्रयोग अन्यत्र भी अपनाया जा सके और वर्गविहीन, समतावादी समाज की दिशा में प्रचलन चल पड़े।

शान्ति कुञ्ज परिवार के कार्यकर्त्ता सामर्थ्य भर काम करेंगे और आवश्यकता भर लेंगे। निर्वाह में औसत भारतीय स्तर का मानदण्ड रखेंगे। सद्भाव भरी साहसिकता का परिचय देंगे। निजी स्वार्थों को परिवार की प्रगति पर उत्सर्ग करेंगे। श्रमशीलता, सहकारिता, मितव्ययता, शिष्टता, सुव्यवस्था के पंचशील अपनाकर सज्जनोचित आचार संहिता का पालन करेंगे।

साधनों के लिए श्रम बेचने की प्रचलित आपा-धापी को निरस्त करना है। अपने को दूसरे से अधिक संयमी, सेवाभावी एवं आदर्शवादी सिद्ध करने की प्रति-

स्पर्धा संजोए रहनी है । इस प्रयोजन को पूरा करने में अपने को आगे रखना है । पिछड़ों से प्रभावित न होकर अपना उदाहरण ऐसा रखना है, जिसका अनुकरण दूसरे कर सकें । अपने को साँचा बनाकर रखने पर ही सम्पर्क में आने वाले उस मार्ग पर चलने की प्रेरणा प्राप्त कर सकते हैं । देव समाज की संरचना इसी प्रकार हो सकेगी ।

कोई भी आश्रम वासी स्वयं को वेतन भोगी कर्मचारी नहीं, सेवाभावी मितव्ययी स्वयं सेवक मानेगा । निष्काम सेवा साधना को महत्ता देगा । यथा सम्भव गृहस्थ जीवन में रहते हुए साधु-ब्राह्मण वानप्रस्थों जैसी रीति-नीति अपनायेगा । गांधी जी, विनोबा जी के आश्रमों की अनुकृति शान्ति कुञ्ज को बनाने की महत्वाकांक्षा हर आश्रम वासी को संजोए रखनी है ।

महिलाएँ अपने को मात्र पति-परिवार की सम्पदा न मानेंगी । वरन् अपने को आश्रम की एक सम्मानित सदस्य अनुभव करेंगी । व्यवस्था में योगदान देंगी और गतिविधियों में अपनी भागीदारी पुरुषों की भाँति ही निबाहेंगी । खाली समय न बिताएँगी । घर-परिवार को, स्वभाव को इस स्तर का रखेंगी, जिससे मिशन का गौरव बढ़े, पुरुषों की प्रतिष्ठा में चार चाँद लगे ।

प्रत्येक कार्यकर्त्ता समय-समय पर घोषित आश्रम के नियमों और मार्यादाओं का पालन निष्ठापूर्वक करेंगे ।

वाणी में कटुता न आने देंगे, नम्रता, सज्जनता, शालीनतायुक्त वाणी का अभ्यास करेंगे ।

किसी की कमी दिखेगी तो जहाँ तहाँ आलोचना निन्दा न करके उपयुक्त सलाह देने का क्रम अपनायेंगे ।

व्यक्ति की विशेषताएँ खोज कर उनकी प्रशंसा करने, प्रोत्साहन देने का अभ्यास करेंगे ।

निर्धारित काम को पूरे श्रम और मनोयोग के साथ करेंगे । काम कम होने पर स्वयं अतिरिक्त काम प्राप्त करने का प्रयास करेंगे ।

इन नियमों को अनिवार्य आचार संहिता मानते हुए ही आश्रम में रहेंगे । आजीवन आश्रम के कार्यकर्त्ता अथवा आंशिक समयदानी कार्यकर्त्ता के रूप में जब तक क्रियारत हैं, स्वेच्छाचार नहीं बरतेंगे । मिशन की प्रतिष्ठा गिराकर लोक भर्त्सना पाने की अपेक्षा सेवा से हाथ खींच लेना अधिक श्रेयस्कर और सन्मानजनक मानेंगे । युग निर्माता का अधिक गौरव सुविधाओं का लाभ लेने में नहीं है । प्रामाणिकता, अनुशासन प्रियता, तत्परता एवं आदर्शवादिता बनाये रखने में ही शान्ति कुञ्ज निवास की प्रतिष्ठा है ।